INSTITUTE FOR DEFENCE STUDIES & ANALYSES
रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान

समीक्षा

क्या ज़ेनोफ़ोबिया दक्षिण अफ़्रीका को जकड़ रहा है?

आनंद कुमार

रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (आईडीएसए), नई दिल्ली में एसोशिएट फ़ेलो हैं और वर्तमान में यूनिवर्सिटी ऑफ़ दार-एस-सलाम, तंज़ानिया में विज़िटिंग प्रोफ़ेसर और अध्यक्ष (इंडिया स्टडीज़) हैं।

04 अक्टूबर 2019

दक्षिण अफ़्रीका में हिंसा की हालिया स्थिति देश में रंगभेद उन्मूलन के बाद के दौर में ख़ुद को बदलने में नाकामी को उजागर करती है। यदि सरकार देश में बढ़ती बेरोज़गारी और सामाजिक-आर्थिक असमानता के मुद्दे को प्रभावी ढंग से निपटने में विफल रहती है, तो समय-समय पर हिंसा की पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

क्या ज़ेनोफ़ोबिया दक्षिण अफ़्रीका को जकड़ रहा है?

दक्षिण अफ़्रीका ने हाल ही में देश में रहने वाले विदेशियों के विरुद्ध हिंसा देखी। इनमें से अधिकांशत: अफ़्रीका के ही अन्य हिस्सों, मुख्य रूप से नाइजीरिया, घाना, ज़ाम्बिया और ज़िम्बाब्वे के प्रवासी श्रमिक थे जो बेहतर अवसरों की तलाश में दक्षिण अफ़्रीका आए थे। ज़ेनोफ़ोबिक प्रतीत होने वाली इन हिंसाओं ने पैन-अफ़्रीकनिज़्म की मूल धारणा को चुनौती दी है। हालांकि, दक्षिण अफ़्रीका इन हिंसाओं से होने वाले नुक़सानों की भरपाई के लिए तैयार है।

प्रिटोरिया में अगस्त के अंत में जो हिंसा भड़की, वह रंगभेद उन्मूलन की नीति के बाद दक्षिण अफ़्रीका में विदेशी प्रवासी श्रमिकों और व्यापार मालिकों के ख़िलाफ़ पहली नहीं थी। एक दशक पहले, मई 2008 में, गौतेंग, पश्चिमी केप, क्वाज़ुलु-नटाल और वेस्टर्न केप प्रांतों में हुए हिंसक विरोध प्रदर्शनों में लगभग 70 लोग मारे गए थे। अप्रैल 2015 में, कई प्रांतों को अपनी चपेट में लेने वाली हिंसा में लगभग सात लोग मारे गए और हज़ारों की संख्या में लोग विस्थापित हुए। मार्च 2018 से अब तक मुख्य रूप से डरबन-जोहानसबर्ग राजमार्ग पर विदेशी ट्रक ड्राइवरों पर अनेक हमले हुए हैं। माना जाता है कि इन हमलों में अब तक 200 से अधिक लोग मारे गए हैं।

हिंसा की ताज़ा घटनाओं में, दो विदेशियों सहित 12 लोग मारे गए हैं। हिंसा तब शुरू हुई जब राजधानी प्रिटोरिया में एक नाइजीरियाई ड्रग डीलर द्वारा एक टैक्सी चालक की कथित तौर पर गोली मारकर हत्या कर दी गई। इसके बाद हुई लूटपाट और तबाही में 50 से अधिक दुकानें और कई वाहन भी नष्ट हो गए। सैकड़ों प्रवासियों, मुख्य रूप से ज़िम्बाब्वे, नाइजीरिया और मोज़ाम्बिक के श्रमिकों को सरकारी शेल्टर्स में शरण लेनी पड़ी। नाइजीरियाई श्रमिकों पर हमलों ने भी नाइजीरिया सरकार को दक्षिण अफ़्रीका से अपने नागरिकों को वापस बुलाने के लिए बाध्य किया।

यद्यपि, हिंसा की प्रकृति बहुत कुछ विदेशी विरोधी थी, लेकिन मारे गए लोगों में से अधिकांश वहाँ के स्थानीय थे। उनमें से ज़्यादातर लूटपाट और दंगे के दौरान मारे गए थे। विदेशी श्रमिकों के ख़िलाफ़ हिंसा के लिए ज़िम्मेदार लोगों को अब तक शायद ही कभी दंडित किया गया हो।

दक्षिण अफ़्रीका नाइजीरिया के बाद अफ़्रीका महाद्वीप की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। यह अफ़्रीका के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित करता है। उनमें से कुछ व्यवसाय के क्षेत्र में लगे हुए हैं लेकिन एक बड़ा हिस्सा कई दक्षिण अफ़्रीकी लोगों की तरह अपने परिवार का भरण-सस्ते पोषण करने के लिए मज़दूरों के रूप में कार्य करते हैं। वे गरीब बस्तियों में रहते हैं जहां उन्हें अकसर

स्थानीय लोगों द्वारा निशाना बनाया जाता है जो उन्हें नौकरियों और आवास के लिए प्रतिस्पर्धी के रूप में देखते हैं।

यह सामान्य मत है कि विदेशी विरोधी हिंसा की जड़ें बहुत गहरी हैं। यह अकसर देश के सामने आने वाली आर्थिक समस्याओं से जुड़ी होती हैं। दक्षिण अफ़्रीका को दुनिया में सबसे असमान राष्ट्र माना जाता है। इसकी एक चौथाई आबादी अत्यधिक गरीबी में रहती है। बेरोज़गारी दर 40 फीसदी के करीब है। रंगभेद की समाप्ति की घोषणा के 25 साल बाद भी अश्वेत आबादी की भौतिक स्थिति में बहुत कम बदलाव आया है।[1] इससे कुछ लोगों का मानना है कि नौकरियों और व्यवसायों पर श्वेत कुलीन वर्ग के वर्चस्व को कम करने की ज़रूरत है। काले अप्रवासी जो ज़ेनोफ़ोबिक हिंसा के लक्ष्य हैं, दक्षिण अफ़्रीका की अर्थव्यवस्था को न के बराबर नियंत्रित करते हैं।

दक्षिण अफ़्रीका में हिंसा की निंदा पूरे अफ़्रीका में की गई है। सर्वाधिक विरोध नाइजीरिया और घाना में हुआ। ज़ाम्बिया के फ़ुटबॉल एसोसिएशन ने भी विरोध में दक्षिण अफ़्रीका के साथ अपने मैत्री मैच को बंद कर दिया। बोत्सवाना ने दक्षिण अफ़्रीका जाने वाले अपने नागरिकों को एक चेतावनी नोटिस जारी किया। नाइजीरिया और ज़ाम्बिया में दक्षिण अफ़्रीका के स्वामित्व वाले व्यवसायों पर हमलों की भी ख़बरें आईं। हालाँकि दक्षिण अफ़्रीका के राष्ट्रपति साइरिल रामाफ़ोसा ने ज़ेनोफ़ोबिक हिंसा के लिए माफ़ी मांगी, लेकिन जब वे हरारे में जिम्बाब्वे के पूर्व राष्ट्रपति रॉबर्ट मुगाबे के अंतिम संस्कार में बोल रहे थे, तो स्थानीय लोगों ने उन पर तानाकशी की।[2]

अफ़्रीकी संघ आयोग (अफ़्रीकन यूनियन कमीशन) के अध्यक्ष मौसा फ़की महामत ने दक्षिण अफ़्रीका में हिंसा और संपत्ति के विनाश की निंदा की है, लेकिन ज़ेनोफ़ोबिया के मूल कारणों को दूर करने में दक्षिण अफ़्रीकी सरकार को अफ़्रीकी संघ के निरंतर समर्थन देते रहने की बात को भी दोहराया है।[3] संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार के उच्चायुक्त, मिशेल बाचेलेट ने भी ज़ेनोफ़ोबिक हिंसा के पीड़ितों की रक्षा करने और हमलावरों को दंडित करने के लिए दक्षिण अफ़्रीकी प्रशासन से तेज़ी से कार्य करने का आग्रह किया है।[4]

---

1 Katy Scott, "South Africa is the world's most unequal country. 25 years of freedom have failed to bridge the divide," *CNN*, May 10, 2019.

2 "Jeered over attacks, S.Africa's president apologises at Mugabe funeral," *AFP*, September 14, 2019.

3 "The Chairperson of the African Union Commission Moussa Faki Mahamat condemns in the strongest terms, the incidents of violence against nationals of fellow African countries in South Africa," *African Union*, September 03, 2019.

4 "Opening statement by UN High Commissioner for Human Rights Michelle Bachelet," *United Nations*, September 10, 2019.

केपटाउन में अफ़्रीका पर तीन दिवसीय विश्व आर्थिक मंच की बैठक के (वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम) साथ हिंसा का प्रकोप भी शुरू हुआ।[5] हिंसा की निंदा करते हुए राष्ट्रपति रामाफ़ोसा ने कहा कि यह दक्षिण अफ़्रीका को समान अवसरों के देश के रूप में प्रदर्शित करने के सरकारी प्रयासों के लिए निराशाजनक था। उन्होंने दावा किया कि अपराधियों के हमलों के डर के बिना विदेशियों के पास देश में ख़ुद का व्यवसाय खोलने और चलाने का अधिकार है। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि सरकार कानून का पालन करने वाले और शांति से अपने जीवन और व्यवसायों का संचालन करने का अधिकार रखने वाले दक्षिण अफ़्रीकी लोगों और विदेशी नागरिकों की सुरक्षा और आजीविका को बाधित करने के लिए रंचमात्र भी अराजकता और हिंसा की अनुमति नहीं देगी।[6] हाल ही में, उच्च बेरोज़गारी दर और सुस्त अर्थव्यवस्था के प्रसार को स्वीकार करते हुए, रामाफ़ोसा ने तर्क दिया कि इसका उपयोग अन्य राष्ट्रों के लोगों को निशाना बनाने के बहाने के रूप में नहीं किया जा सकता है।[7]

हालाँकि, ह्यूमन राइट्स वॉच (एचआरडब्ल्यू) जैसे संगठन का मानना है कि हिंसा की निंदा करना पर्याप्त नहीं है। उनके विचार में, विदेशी नागरिकों और उनकी संपत्तियों की सुरक्षा के लिए प्रभावी पुलिसिंग की कमी के कारण अकसर ऐसी घटनाओं का सामना करना पड़ता है।[8] हमलावरों पर नियंत्रण रखने के लिए, पुलिस का घटनाओं की तह तक जाँच करना और ज़िम्मेदार लोगों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करना आवश्यक है। एचआरडब्ल्यू को लगता है कि सरकार ने इन हमलों के कारणों को दूर करने के लिए इस साल मार्च में ज़ेनोफ़ोबिया से निपटने के लिए एक राष्ट्रीय कार्य योजना जारी करने के सिवाय कुछ नहीं किया है। यह कार्ययोजना अभी तक लागू नहीं हुई है।

हालांकि राष्ट्रपति रामाफ़ोसा ने अफ़्रीकी लोगों से बार-बार माफ़ी मांगी है, लेकिन भविष्य में हिंसा की संभावना बनी हुई है। अभी तक इसने दक्षिण अफ़्रीका और अन्य अफ़्रीकी देशों के बीच या दक्षिण अफ़्रीका और अफ़्रीकी संघ के बीच कोई राजनयिक तनाव पैदा नहीं किया है, लेकिन लंबे समय तक इसकी संभावना को ख़ारिज नहीं किया जा सकता है। क्षति नियंत्रण की प्रक्रिया में, राष्ट्रपति रामाफ़ोसा सरकार की स्थिति को समझाने के लिए विशेष दूत भेज रहे हैं। वे देश की छवि को सुधारने के उद्देश्य से नाइजीरिया, घाना, सेनेगल, तंज़ानिया, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो और ज़ाम्बिया सहित कई अफ़्रीकी देशों का दौरा कर रहे हैं।

---

5 Carol Paton, "'The nation is in mourning,' Ramaphosa tells business leaders ahead of WEF," *BusinessLive*, September 04, 2019.

6 **"President condemns latest public violence,"** *The Presidency, Republic of South Africa*, September 09, 2019.

7 **"South Africa Vows to Crack Down on Violence Against Nigerians,"** *The New York Times*, October 03, 2019.

8 "South Africa: Punish Xenophobic Violence," *Human Rights Watch*, September 13, 2019.

राष्ट्रपति रामाफ़ोसा के विशेष दूत जेफ़ राडबे ने नाइजीरियाई राजधानी अबूजा की अपनी यात्रा के दौरान नाइजीरियाई सरकार से हिंसा के लिए माफ़ी माँगी और कहा है कि ऐसी घटनाएँ दक्षिण अफ़्रीका की मान्यताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं। उन्होंने आश्वासन दिया कि दक्षिण अफ़्रीकी पुलिस हिंसा में शामिल लोगों को दंडित करने के लिए हर संभव प्रयास करेगी। दक्षिण अफ़्रीका के महाद्वीपीय निकाय को पैन-अफ़्रीकनिज़्म और अफ़्रीकी एकता के आदर्शों के प्रति आश्वस्त करने के लिए हम अपने एक दल से उम्मीद कर रहे हैं कि वह अफ़्रीकी संघ का दौरा करे।

दक्षिण अफ़्रीका में हिंसा की हालिया घटनाओं का मूल रंगभेद की समाप्ति के बाद के युग में ख़ुद को सामाजिक और आर्थिक रूप से न बदल पाने की विफलता में निहित है। सरकार देश में बढ़ती बेरोज़गारी और सामाजिकआर्थिक असमानता के मुद्दे से निपट पाने में असमर्थ रही है। इसी तरह- कानून और व्यवस्था की अनियमितता से जनता का मोहभंग हो रहा है। यदि सरकार इन मुद्दों को समय पर और प्रभावी तरीके से निपटने में विफल रहती है तो हिंसा की ऐसी घटनाओं की बारबार घटने की संभावना - है।

रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (आईडीएसए) एक निष्पक्ष और स्वायत्त निकाय है जो रक्षा के सभी आयामों पर वस्तुनिष्ठ अनुसंधान और नीतिगत अध्ययन के लिए समर्पित है। इसका उद्देश्य वर्तमान में रक्षा से संबंधित मुद्दों पर ज्ञान के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ावा देना है।

उपरोक्त विचार लेखक के अपने निजी विचार हैं और यह आवश्यक नहीं है कि वह आईडीएसए अथवा भारत सरकार के विचारों का प्रतिनिधित्व करे।

प्रस्तुत आलेख अपने मूल रूप में अंग्रेज़ी भाषा में लिखा गया है, जो आईडीएसए की वेबसाइट पर उपलब्ध है। किसी भी द्वंद्व की स्थिति में अंग्रेज़ी भाषा का आलेख ही मान्य होगा।